#### Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क़	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्ज	<b>उ</b> ज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्त:
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इज़्जत	स्रोह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ़	लड्डू	लडू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ह्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्ज़ी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	<u>चंद्र</u>	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़्म	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख़	<b>ल्या</b> हिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

### चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

### चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

#### गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शूल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

# 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

## केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिप-कार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लि-पकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपका-र्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेंट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोक्स सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43.950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी  $\sqrt{\frac{3.5-5.6}{6}}$  किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिख़े, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

#### गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निद्यों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब

### गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

से होता, इस बखेडे को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सूनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा - परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing	पपहपवपवहवव	Rakar spacing	पपळ्रपवपवळ्रवव	पपद्वपवपवद्ववव
पपकपवपवकवव	पपक्रपवपवक्रवव		पपक्षपवपवक्षवव	पपद्धपवपवद्धवव
पपखपवपवखवव	पपख़पवपवख़वव	पपक्रपवपवक्रवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपद्ध्यपवपवद्भ्यवव
पपगपवपवगवव	पपग़पवपवग़वव	पपख्रपवपवख्रवव		पपद्मपवपवद्मवव
पपघपवपवघवव	पपज़पवपवज़वव	पपग्रपवपवग्रवव	Conjunct spacing	पपद्भपवपवद्भवव
पपङ्पवपवङ्वव	पपड़पवपवड़वव	पपघ्रपवपवघ्रवव		पपद्दपवपवद्दवव
पपचपवपवचवव	पपढ़पवपवढ़वव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपक्तपवपवक्तवव	पपन्भपवपवन्भवव
पपछपवपवछवव	पपफ़पवपवफ़वव	पपच्चपवपवच्चवव	पपरुपवपवरुवव	पपन्मपवपवन्मवव
	पपयपवपवयवव	पपछ्रपवपवछ्रवव	पपरूपवपवरूवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपजपवपवजवव	पपक्षपवपवक्षवव	पपज्रपवपवज्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपल्थपवपवल्थवव
पपझपवपवझवव	पपज्ञपवपवज्ञवव	पपझपवपवझवव	पपज्जपवपवज्जवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपञपवपवञवव	` `	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपञ्थपवपवञ्थवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपटपवपवटवव	Vowel spacing	पपट्रपवपवट्रवव	पपज्यपवपवज्यवव	पपल्यपवपवल्यवव
पपठपवपवठवव		पपठ्रपवपवठ्रवव	पपज्सपवपवज्सवव	पपद्यपवपवद्यवव
पपडपवपवडवव	पपअपवपवअवव	पपड्रपवपवड्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव
पपढपवपवढवव	पपऄपवपवऄवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपद्मपवपवद्मवव
पपणपवपवणवव	पपॲपवपवॲवव	पपण्रपवपवण्रवव	पपठ्यपवपवठ्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपतपवपवतवव	पपइपवपवइवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपन्भपवपवन्भवव
पपथपवपवथवव	पपईपवपवईवव	पपथ्रपवपवथ्रवव	पपढ्यपवपवढ्यवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपदपवपवदवव	पपउपवपवउवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपधपवपवधवव	पपऊपवपवऊवव	पपध्रपवपवध्रवव	पपटुपवपवट्ठवव	
पपनपवपवनवव	पपएपवपवएवव	पपन्नपवपवन्नवव	पपठुपवपवठ्ठवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपपपवपवपवव	पपऐपवपवऐवव	पपप्रपवपवप्रवव	पपहृपवपवहृवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपफपवपवफवव	पपऍपवपवऍवव	पपफ्रपवपवफ्रवव	पपडूँपवपवडूँवव	पपह्मपवपवह्मवव
पपबपवपवबवव	पपऎपवपवऎवव	पपब्रपवपवब्रवव	पपढूपवपवढूवव	पपह्यपवपवह्यवव
पपभपवपवभवव	पपआपवपवआवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपत्तपवपवत्तवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपमपवपवमवव	पपओपवपवओवव	पपम्रपवपवम्रवव	पपत्खपवपवत्खवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपयपवपवयवव	पपऔपवपवऔवव	पपग्रपवपवग्रवव	पपत्थपवपवत्थवव	
पपरपवपवरवव	पपऋपवपवऋवव	पपरूपवपवरूवव	पपत्नपवपवत्नवव	U/Uu variant spacing
पपलपवपवलवव	पपऋपवपवऋवव	, पपत्नपवपवत्नवव	पपत्सपवपवत्सवव	पपहुपवपवहुवव
पपळपवपवळवव	पपलृपवपवलुवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपत्यपवपवत्यवव	पपहूपवपवहूवव
पपवपवपववव	पपॡपवपवॡवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपद्धपवपवद्धवव	पपहृपवपवहृवव
पपशपवपवशवव		पप्रप्रवपवप्रवव	पपद्गपवपवद्गवव	पपहृपवपवहृवव
पपषपवपवषवव		पपस्रपवपवस्रवव	पपद्वपवपवद्ववव	पपहुपवपवहुवव
पपसपवपवसवव		पपह्रपवपवह्रवव	पपद्भपवपवद्भवव	पपहूपवपवहूवव
		ררשרו רו שו ו	ו וקאל ו דו די מיל די די	1161213623

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौंपपरौंपपकौंपप

पपपुपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकूपप पपपृपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकूपप पपपूपपरूपपकूपप पपपूपपरूपपकूपप

पपर्पपपर्पपक्षपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव

		J
Numeral spacing	पपफ, पवफ.	पपआ, पवआ. पपओ, पवओ.
0000१0१0११ 00१0१0११११ 00२0१0१३११ 00४0१०१४११ 00५0१0१५११	पपब, पवब. पपभ, पवभ. पपम, पवम. पपय, पवय. पपर, पवर. पपल, पवल.	पपओ, पवआ. पपओ, पवऔ. पपऋ, पवऋ. पपऋ, पवऋ. पपऌ, पवऌ. पपॡ, पवॡ.
0040₹0₹4₹₹ 00६0₹0₹6₹₹ 0060₹0₹6₹₹ 00€0₹0₹€₹	पपळ, पवळ. पपव, पवव. पपश, पवश. पपष, पवष. पपस, पवस.	पपङ्ग, पवङ्ग. पपछ्र, पवछ्र. पपट्र, पवट्र. पपठ्र, पवठ्र.
Letter-punct spacing पपक, पवक.	पपह, पवह. पपक़, पवक़. पपख़, पवख़.	पपड़, पवड़. पपड़, पवड़. पपढ़, पवढ़. पपट पवट

Let чu पपख, पवख. पपग, पवग. पपघ, पवघ. पपङ, पवङ. पपच, पवच. पपछ, पवछ. पपज, पवज. पपझ, पवझ. पपञ, पवञ. पपट, पवट. पपठ, पवठ. पपड, पवड. पपढ, पवढ. पपण, पवण. पपत, पवत. पपथ, पवथ. पपद, पवद. पपध, पवध.

पपन, पवन.

पपप, पवप.

पपग़, पवग़. पपरू, पवरू. पपज़, पवज़. पपड़, पवड़. पपढ़, पवढ़. पपफ़, पवफ़. पपय़, पवय़. पपक्ष, पवक्ष. पपज्ञ, पवज्ञ. पपअ, पवअ. पपऄ, पवऄ. पपॲ, पवॲ. पपड, पवड. पपई, पवई. पपउ, पवउ. पपऊ, पवऊ. पपए, पवए. पपऐ, पवऐ. पपऍ, पवऍ. पपऎ, पवऎ,

पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्, पवह्. पपहू, पवहू. पपह, पवह. पपह, पवह. पपह्र, पवह्र. पपद्र, पवद्र. पपह्र, पवह्र. पपरु, पवरु. पपह, पवह. पपरू, पवरू. पपळू, पवळू. पपद्, पवद्. पपदू, पवदू. पपक्त, पवक्त. पपद्, पवद्. पपरु, पवरु. पप्रू, पव्रू. पपट्ट, पवट्ट. पपकः पवकः पपट्ठ, पवट्ठ. पपखः पवखः पपठ्र, पवठ्र. पपगः पवगः पपडू, पवडू. पपघ; पवघ: पपडू, पवडू. पपङ: पवङ: पपढू, पवढू. पपचः पवचः पपद्ध, पवद्ध. पपछ; पवछ: पपद्ग, पवद्ग. पपजः पवजः पपद्ध, पवद्ध. पपझ: पवझ: पपद्भ, पवद्भ. पपञः पवञः पपद्ग, पवद्ग. पपट; पवट: पपद्ध, पवद्ध. पपठ; पवठ:

पपद्द, पवद्द.

पपष्ट, पवष्ट.

पपष्ठ, पवष्ठ.

पपन्भ, पवन्भ.

पपल्ज, पवल्ज.

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्ढ; पवड्ढ:	पपघ। पवघ:	पपड़  पवड़:	पपह्न। पवह्न:	पपरू। पवरू:
पपढ; पवढ:	पपइ; पवइ:	पपड्डु; पवड्डु:	पपङ। पवङ:	पपढ़। पवढ़:	पपळ्र  पवळ्र:	पपदु। पवदुः
पपण; पवण:	पपई; पवई:	पपढ्ढ; पवढ्ढ:	पपच। पवच:	पपफ़। पवफ़:		पपदू। पवदू:
पपत; पवत:	पपउ; पवउ:	पपद्ध; पवद्ध:	पपछ। पवछ:	पपय्र। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृ:
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्गः; पवद्गः	पपज। पवज:	पपक्ष। पवक्ष:	पपरू। पवरु:	
पपद; पवद:	पपए; पवए:	पपद्ध; पवद्ध:	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपरू। पवरू:	-
पपधः; पवधः	पपऐ; पवऐ:	पपद्भ; पवद्भ:	पपञ। पवञ:		पपट्ट। पवट्ट:	पपक! पवक?
पपन; पवन:	पपऍ; पवऍ:	पपद्व; पवद्व:	पपट। पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्ठ। पवट्ठः	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्ध; पवद्ध:	पपठ। पवठ:	पपञ्जे। पवञै:	पपठ्ठ। पवठ्ठ:	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्द; पवद्द:	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपड्ढं। पवड्ढं:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्ट; पवष्ट:	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपडू। पवडू:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपन्भ; पवन्भ:	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढू। पवढू:	पपच! पवच?
पपम; पवम:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवत:	पपउ। पवउ:	पपद्ध। पवद्धः	पपछ! पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपल्जः; पवल्जः	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः:	पपह्न; पवह्न:	पपद। पवद:	पपए। पवए:	पपद्व। पवद्धः	पपझ! पवझ?
पपल; पवल:	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवध:	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भः	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्न; पवह्न:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्वः	पपट! पवट?
पपव; पवव:		पपह्न; पवह्न:	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपश; पवश:	पपङ्गः पवङ्गः		पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्। पवद्दः	पपड! पवड?
पपषः; पवषः	पपछ्र; पवछ्र:	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्ट। पवष्टः	पपढ! पवढ?
पपस; पवस:	पपट्र; पवट्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपन्भ। पवन्भः	पपण! पवण?
पपह; पवह:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहुँ; पवहुँ:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत! पवत?
पपक़; पवक़:	पपड्र; पवड्र:	पपह्; पवहृ:	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपल्ज। पवल्जः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपद्र; पवद्र:	पपहु; पवहु:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्न। पवह्न:	पपद! पवद?
पपग़; पवग़:	पपद्र; पवद्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपल। पवल:	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्न:	पपध! पवध?
पपज़; पवज़:	पपर्; पवर्:	पपरु; पवरु:	पपळ। पवळ:		पपह्न। पवह्न:	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्नः पवहः	पपरू; पवरू:	पपव। पववः		पपह्न। पवह्न:	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदु:	पपश। पवश:	पपङ्ग। पवङ्गः		पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपदूः पवदूः	पपष। पवष:	पपछ्र। पवछ्र:	पपहु। पवहु:	पपब! पवब?
पपयः; पवयः	पपक्तः पवक्तः	पपदृः; पवदृः	पपस। पवस:	पपट्र। पवट्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपरु; पवरु:		पपह। पवह:	पपठ्र। पवठ्र:	पपहृ। पवहृ:	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपरूः; पवरूः:	-	पपक़। पवक़:	पपड्र। पवड्र:	पपहृ। पवहृ:	पपय! पवय?
	पपट्टः पवट्टः	पपक। पवकः	पपख़। पवख़:	पपद्र। पवद्र:	पपह्रु। पवह्रु:	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठः पवट्ठः	पपख। पवख:	पपग़। पवग़:	पपद्र। पवद्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपल! पवल?
पपऄ; पवऄ:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपग। पवग:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपरू। पवरू:	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्र?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्र! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहूं! पवहूं?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपन्भ-न्भपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहृं! पवहृं?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपल्ज-ल्जपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्रु! पवह्रु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्ल-ह्रपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्रू! पवह्रू?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपरू! पवरू?	पपरुं! पवरुं?	पपळ-ळपव		पपह्ल-ह्लपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्र! पवह्र?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळू! पवळू?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्र-ङ्रपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदूं! पवदूं?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपदृं! पवदृं?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय! पवय?	पपरु! पवरु?		पपह-हपव	पपठ्र-ठ्रपव	पपह-हंपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपरू! पवरू?	-	पपक़-क़पव	पपडू-ड्रपव	पपह्-हृपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र-ह्रुपव	"रपवपर"
	पपट्ट! पवट्ट?	पपख-खपव	पपग़-ग़पव	पपद्र-द्रपव	पपहूँ-हूँपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपऱ्-ऱ्रपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄ?	पपडूं! पवडूं?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपड्डू! पवड्डू?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळू-ळूपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढूं! पवढूं?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव		पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्धे! पवद्धे?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव	पपक्त-क्तपव	पपर्-दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपरु-रुपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपर्रू-रूपव	-	"क़पवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भ! पवद्भ?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"खपवपख"	"ग़पवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपऄ-ऄपव	पपठु-ठुपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्। पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ड-ड्रुपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपड्ड-ड्डपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपन्भ! पवन्भ?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपढु-ढुपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"य़पवपय़"
पपऋ! पवऋ?	पपल्ज! पवल्ज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्वपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपल! पवल?	पपह्न! पवह्न?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्व-द्वपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपह्न! पवह्न?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध–द्धपव	"ठपवपठ"	"ऄपवपऄ"

"ॲपवपॲ" "इपवपइ" "ईपवपई"	"डुपवपडु" "ढुपवपढु" "द्धपवपद्ध"	Num-punct spacing पवप ₹१०१ वपव	li Vowel sign - base पपकिपपकिंपपर्किपप	पपहिपपहिंपपर्हिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप
"उपवपउ"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप	ने नाहा ने नाहा ने नाहा ने ने न
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप पपघिपपघिंपपर्घिपप	
"एपवपए"	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹४०१ वपव	पपङिपपङिंपपङिंपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप	
"ऍपवपऍवव	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप	
"ऎपवपऎ" "~~~~~	"द्दपवपद्द"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप	
"आपवपआ" "ओपवपओ"	"ष्ट्रपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप	
"ओपवपओ" "औपवपऔ"	"भपवपभ" "ष्ठपवपष्ठ"		पपञिपपञिंपपर्ञिपप	
"ऋपवपऋ"	"ल्जपवपल्ज"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपर्टिपप	
"ऋपवपऋ"	"ह्रपवपह्न"	००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपर्ठिपप	
"लुपवपल्"	"ह्रपवपह्र"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपर्डिपप पपढिपपढिंपपर्ढिपप	
"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न"	003,080,388	पपणिपपणिंपपर्णिपप पपणिपपणिंपपर्णिपप	
	"ह्रपवपह्न"	00%,080,%88	पपतिपपतिंपपर्तिपप	
"ङ्रपवपङ्र"		००५,०१०,५११ ००६,०१०,६९१	पपथिपपथिंपपर्थिपप	
"छ्रपवपछ्र"	"हुपवपहु"	००६,०१०,६११ ००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपर्दिपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप	
" <u>д</u> чачд"	"हपवपह" " <del></del> "	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपर्निपप	
"ड्रपवपड्र"	"हृपवपहृ"	,, , ,, , ,	पपपिपपपिंपपर्पिपप	
"द्रपवपद्र" "नगनगन"	"हुपवपहु" "टाप्टपट"	000.080.088	पपफिपपफिंपपर्फिपप	
"द्रपवपद्र" "गातार"	"हूपवपहू" "रुपवपरु"	००१.०१०.१११	पपबिपपबिंपपर्बिपप	
"ऱ्पवपऱ्" "ह्रपवपह्र"	"रूपवपरू"	००२.०१०.२११	पपभिपपभिंपपर्भिपप	
"ळ्पवपळ्"	"दुपवपदु"	००३.०१०.३११	पपमिपपमिंपपर्मिपप	
× 1119×	उ ' ' ' उ "दूपवपदू"	००४.०१०.४११	पपयिपपयिंपपर्यिपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	००५.०१०.५११	पपरिपपरिंपपरिंपप पपलिपपलिंपपर्लिपप	
"रुपवपरु"	c c	००६.०१०.६११	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"रूपवपरू"		980,080,000	पपविपपविंपपर्विपप	
"ट्टपवपट्ट"		00८.0१०.८११	पपशिपपशिंपपर्शिपप	
"हपवपह"		००९.०१० <u>९</u> ११	पपषिपपषिंपपर्षिपप	
"ठुपवपठ्ठ"			पपसिपपसिंपपर्सिपप	
"ड्रुपवपड्र"				

Ii Vowel sign clusters	पपक्त्विपप	पपर्ग्भिपप	पपङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्मिपप	पपर्धिपप
_	पपर्क्यिपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपर्क्किपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्र्वीपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपर्क्खिपप पपर्क्गिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्घींपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ह्रिपप	पपर्त्लिपप	पपर्द्ध्यिपप
पपार्क्यापप पपर्क्चिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्चिंपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ठीपप	पपर्त्विपप	पपर्द्व्रिपप
पपक्छिपप पपक्छिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्व्रिपप	पपर्त्सिपप	पपर्द्ऱ्यिपप
पपक्जिपप पपर्क्जिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्र्जीपप	पपर्ज्निपप	पपर्ठ्ठ्यपप	पपत्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपक्झिंपप पपर्क्झिंपप	पपर्क्प्रिपप	पपर्ग्ध्यिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्क्रिपप	पपर्ध्धिपप
पपर्क्सिपप पपर्क्टिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ड्मिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्सिपप	पपर्ध्निपप
पपर्क्टिपप पपर्क्टिपप	पपर्ख्खिपप	पपग्न्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्खिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्डिपप पपर्क्डिपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भ्यिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ड्डियपप	पपर्ल्ख्रिपप	पपर्ध्रिपप
पपर्क्टिपप पपर्क्टिपप	पपर्ख्विपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्ल्ख्रिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्णिपप पपर्क्णिपप	पपर्ख्णिपप	पपर्ग्स्यिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ढीुपप	पपर्त्यिपप	पपर्ध्विपप
पपर्क्तिपप पपर्क्तिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्ल्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्विपप	पपर्त्प्रिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्थिपप पपर्क्थिपप	पपर्ख्द्पप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्ट्सिपप	पपर्न्किपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्निपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्व्ढ्यिपप	पपर्त्म्यिपप	पपर्न्खिपप
पपर्क्निपप पपर्क्निपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्झिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्सिपप	पपर्न्चिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्मिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ण्टीपप	पपर्त्स्यपप	पपर्न्छिपप
पपर्क्षिपप पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपिर्स्विपप	पपर्न्जिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्णिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपित्स्र्न्यपप	पपर्न्झिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्हिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्मिपप पपर्क्मिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्थ्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्बिपप	पपर्जिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपक्लिपप -	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्रिपप	पपर्श्रिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्लिपप	पपर्न्थिपप
पपिक्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्लिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्विपप	पपर्न्दिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ग्गिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्चिपप	पपञ्चिंपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्सिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्द्भिपप	पपर्न्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्पिपप	पपर्ट्ट्रिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्पिपप
पपर्क्ळिपप	पपर्ग्तिपप	पपघ्ल्यिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्लिपप	पपर्द्विपप	पपर्म्भिपप
पपक्क्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्चिपप	पपर्ह्रिपप	पपर्त्पिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्र्कीपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ट्घीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्धिपप	पपर्भिपप
पपक्त्यिपप	पपर्ग्निपप	पपङ्खिपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्भिपप	पपर्मिपप
1 114(411	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछिर्वपप	पपर्ट्रिपप	पपर्लिपप	पपर्झिपप	पपर्न्यिपप

पपर्न्निपप पपर्मिपप पपर्त्दिपप पपर्स्टिपप	पपर्ळ्यिपप
पपन्लिपप पपर्प्पिपप पपम्मिपप पपर्लिपप पपर्स्ठिपप	पपळ्पिपप पपळ्पिपप
पपन्विपप पपर्प्तिपप पपर्म्यिप पपर्ल्पिप पपर्स्डिपप	पपाळ्चिपप पपळ्विपप
पपन्सिंपप पपप्मिंपप पपम्रिंपप पपर्ल्बिपप पपर्स्टिपप	पपर्क्ष्यिपप पपर्क्ष्यिपप
	पपक्ष्मिपप पपक्ष्मिपप
पपर्स्थिपप पपर्स्थिपप पपर्स्थिपप पपर्स्थिपप	पपर्स्विपप
पपन्भिर्वपप पपप्लिपप पपर्स्थिपप पपर्ल्यिपप पपर्स्टिपप	
पपन्चिंपप पपर्चिंपप पपर्सिपप पपर्लिपप पपर्सिपप	
पपन्स्टिंपप पपर्ष्पिपप पपर्स्तिपप पपर्स्पिपप	
पपन्स्यिपप पपर्स्सिपप पपम्स्यिपप पपर्ल्सिपप पपर्स्सिपप	
पपर्म्ह्यिपप पपर्ष्ळिपप पपर्म्प्रिपप पपर्ल्हिपप पपर्स्बिपप	
पपन्जिंपप पपप्तिंपप पपम्बिंपप पपल्लिंपप पपर्सिपप	
पपन्क्सिपप पपर्म्किपप पपर्म्ब्रिपप पपर्ल्ह्यिपप पपर्स्थिपप	
पपन्त्र्यिपप पपर्म्जिपप पपर्म्यिपप पपर्ल्क्यिपप पपर्स्निपप	
पपन्त्सिपप पपर्म्टिपप पपर्म्श्रिपप पपर्ल्थिपप पपस्त्रिपप	
पपर्स्थिपप पपर्म्तिपप पपर्म्बिपप पपर्ल्द्रिपप पपर्स्विपप	
पपर्स्विपप पपर्स्तिपप पपर्स्विपप पपर्स्सिपप	
पपर्न्द्रिपप पपर्म्निपप पपर्य्रिपप पपश्खिपप पपस्मिर्यपप	
पपर्न्हिपप पपर्फ्निपप पपर्श्चिपप पपर्स्क्रिपप	
पपर्स्यिपप पपर्म्मिपप पपर्व्यिपप पपश्छिपप पपस्त्यिपप	
पपर्स्थिपप पपर्स्थिपप पपर्श्टिपप पपर्स्थिपप	
पपर्न्प्रिपप पपर्क्रिपप पपर्स्तिपप पपस्म्यिपप	
पपन्स्म्यपप पपर्म्लिपप पपर्स्तिपप पपर्स्तिपप पपस्तिपप	
पपर्प्किपप पपर्म्शिपप पपर्व्हिपप पपर्श्विपप पपर्स्प्रिपप	
पपर्स्झिपप पपर्भ्निपप पपर्ल्किपप पपर्श्मिपप पपर्स्न्यिपप	
पपर्प्टिपप पपर्भ्यिपप पपर्ल्खिपप पपर्श्यिपप पपर्ह्लिपप	
पपर्प्तिपप पपर्श्निपप पपर्श्निपप पपर्स्तिपप	
पपर्प्टीपप पपर्श्लिपप पपर्श्विपप पपर्श्विपप पपर्श्विपप	
पपर्ष्डिपप पपर्भ्विपप पपर्ल्जिपप पपर्श्विपप पपर्ह्मिपप	
पपर्प्टिपप पपर्श्रिपप पपर्शिपप पपर्शिपप पपर्शिपप	
पपर्णिपप पपर्स्तिपप पपर्ल्टिपप पपर्श्चिपप पपर्ह्हिपप	
पपर्प्तिपप पपर्स्विपप पपर्स्किपप पपर्ह्विपप	
पपर्थिपप पपर्मिपप पपर्ल्हिपप पपर्स्खिपप पपर्ह्हिपप	
पपर्प्दिपप पपर्म्पिपप पपर्ल्तिपप पपर्स्छिपप पपर्ह्हिपप	
पपर्धिपप पपर्म्बिपप पपर्ल्थिपप पपर्स्जिपप पपर्ह्विपप	

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्छपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्कपपक्यपप

पपर्क्रपपरख्यपपखापपर्ख्यपपर्ख्यप पर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यप पर्ख्यपरख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यप पर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यप पर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यप पर्ख्यपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यपपर्ख्यप पर्ख्यपरख्यपर्ख्यपरख्यपप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्ङपपगचप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपपग्फपपग्बपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्लपपग्कपपग्ळपपग्अपपग्शपपग्डप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपगगप्रपपग्जपपग्डप पग्दपपग्फपपग्यपप

पपघ्कपपघ्खपपञापपघ्यपपघ्डपपघ्यप पघ्छपपघ्जपपघ्झपपघ्जपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप पघ्टपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपध्यपपघ्नप पघ्नपपघ्मपपघ्कपपघ्बपपघ्भपपघ्मपघ्यप पघ्नपपघ्मपपघ्लपपघ्ळपपघ्ळपपघ्यप पघ्नपपघ्मपपघ्सपपघ्हपपघ्कपपघ्खपपघ्नप पघ्नपपघ्नपपघ्टपपघ्कपपघ्यपप पपच्कपपच्खपपचापपच्घपपच्छपपच्चप पच्छपपच्जपपच्झपपच्जपपच्टपपच्ठपपच्छप पच्ढपपच्णपपच्तपपच्थपपच्दपपच्धपपच्जप पच्नपपच्मपपच्कपपच्खपपच्भपपच्यप पच्चपपच्यपपच्कपपच्ळपपच्छपपच्यपपच्थाप पच्यपपच्सपपच्हपपच्कपपच्छपपच्यपपच्यप पच्छपपच्हपपच्कपपच्छपप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्पपछ्रपपछलप पछळपपछळपपछवपपछशपपछसप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछहपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्डप पज्दपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्खपपज्भपपज्मपपज्यप पज्रपपज्सपपज्लपपज्ळपपज्ळपपज्वपपज्शप पज्यपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्गपप्रज्ञप पज्डपपज्सपपज्सपपज्सपप

पपइक्तपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पद्मपपइसपपइलपपइळपपइखपपइशप पद्मपपइसपपइहपपइक्रपपइखपपइग्रपपइजप पइडपपइद्यपइफ़पपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्डपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्गपपञ्कपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्जपपञ्मपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्शप पञ्मपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्जप पञ्चपपञ्कपपञ्कपपञ्चप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्रपपट्रपपट्लपपट्ळपपट्कपपट्वपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्कपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप

पप्रकपप्रखपप्रगपप्रघपप्रङपप्रचप पर्छपप्रजपप्रझपप्रजपप्रटपप्रष्ठपप्रडप पर्ढपप्रणपप्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रनप पर्नप्रप्रपप्रपप्रक्षपप्रचपप्रभप्रचप पर्रप्रप्रप्रप्रप्रलप्रचप्रखप्रवपप्रशप पर्षप्रप्रप्रसप्रहप्रप्रक्षप्रव्खप्रस्राप्रजप पर्रप्रप्रदूपप्रहप्रप्रव्झप्रप्रखप्रयुप्रप्रच्लप्रस्

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डुप पट्टुपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पद्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्कपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्डपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्चप पद्रपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्अपपढ्नपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढुद्रपपढ्फपपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्डप पण्डपपण्जपपण्कपपण्खपपण्भपपण्मपण्यप पण्नपपण्पपण्लपपण्ळपपण्ळपपण्यप पण्यपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्गप पण्यपण्डपपण्कपपण्कपपण्यप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यपप

पपत्कपपत्खपपतापपत्धपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्थपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्नपपत्डपपत्कपपत्सपप

पपद्कपपद्खपपद्भपपद्धपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ठपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्भपद्भप पद्नपपद्नपपद्भपपद्कपपद्ळपपद्य पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्झपपद्हपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप

पपध्कपपध्खपपशापपध्यपपस्टपपध्यप पध्छपपध्जपपध्सपपध्यपपध्टपपध्ठपपध्टप पद्यपपश्णपपध्तपपध्यपपध्यपपध्मपपध्मप पद्मपपध्मपपध्मपपध्वपपध्यप पप्रपपद्मपपध्नपपद्खपपध्वपपश्चप पष्मपपस्मपपद्मपपद्मपप्खपपश्चपपश्चप पद्मपपद्मपपद्मपप्स्मपप्र

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्डपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्यप पन्फपपन्बपपन्थपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्यपप

पपःकपपःखपपःगपपःधपपःङपपःचपपःछप पःजपपःझपपःअपपःटपपःठपपःडपपःढप पःगपपःतपपःथपपःदपपःधपपःनपपःनपपःग पपःफपपःबपपःभपपःमपपःयपपञ्चपपःरपपःअप पःळपपःळपपःवपपःशपपःसपपःसपपःहपपःकप पःखपपःगपपःजपपःइपपःइपपःकपप

पपप्कपपप्खपपणपपप्घपपप्डपपघ्वपपप्छप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्कप पप्तपपप्थपपप्दपपध्यपप्नपपप्नपप्पपपप्कप पप्अपपप्वपपप्थपपप्यपपप्रपपप्रपपप्लपपप्ळप पप्जपपप्वपपप्शपपप्यपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पपापप्जपपप्डपपप्डपपप्कपपप्यपप पपम्कपपपस्खपपम्गपपस्यपपम्झपपम्चप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्झप पम्हपपम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नप पम्नपपम्पपपम्कपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यप प्रमपप्रपपम्लपपम्ळपपम्छपपम्वपपम्शप पम्भपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपम्जप पम्झपपम्हपपम्कपपम्यपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्यपपभ्रतपभ्रवपपभ्यपपभ्रवप पभ्जपपभ्रवपभ्रवपभ्यपपभ्रवपपभ्रवपपभ्रवपभ्रव पभ्यपपभ्रवपभ्रवपभ्रवपभ्रवपभ्रवपभ्रव पभ्यपपभ्रवपभ्रवपभ्रवपभ्रवपपभ्रवपपभ्रव पभ्रवपभ्रवपभ्रवपभ्रवपभ्रवपपभ्रवपपभ्रव पभ्रवपभ्रवपभ्रवपभ्रवपपभ्रवपपभ्रवपपभ्रवप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्छपपम्हपपम्दप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नपपम्नपपम्लप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्हपपम्कपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्कप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्ङपपय्चपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्दप पय्जपपय्वपपय्भपपय्यपप्रपपय्जपप्यप पय्कपपय्जपपय्वपपय्शपपय्मपप्यपप्रपपय्लप पय्कपपय्खपपयापप्यपप्यपप्यपप्यपप्यस्प पय्कपपय्खपपयापप्यपप्यपप्यप्यस्पप्यस्प पय्यपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्वपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्कपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्क्रपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्दप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपञ्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्यपप्रूपपन्तपपन्मप पन्कपपन्वपपन्शपपन्यपप्रूपपन्तपपन्तपपन्छप पन्जपपन्जपपन्डपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कपपन्खप पनापपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्

पपल्कपपल्खपपलगपपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्डपपल्डप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्पपपल्लपपल्ळपपल्ञपपल्वपपल्शपपल्थप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पल्हपपल्फपपल्यपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळठप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळफपपळबप पळभपपळमपपळयपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळमपपळसपपळहप पळकपपळखपपळग्रापपळजपपळडप पळकपपळखपपळग्रापपळजपपळडप पळढ़पपळखपपळग्रापप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळऩपपळपपपळफपपळबप पळभपपळनपपळयपपळपपळशपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळग्रपळजपपळडप पळढपपळकपपळखपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्ङपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नप पश्पपश्कपपश्चपपश्मपपश्मपपश्मप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्शपपश्षप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्टपपश्कपपश्यपप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्जप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्मपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्मपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपह्मपपह्घपपह्चपपह्चपपह्खप पह्जपपह्झपपह्ञपपह्टपपह्ठपपह्डपपह्डप पह्चपपह्यपपह्थपपह्यपपह्थपपह्मपपह्मप पट्कपपह्खपपह्मपपह्मपपह्मपपह्मपपह्मप पह्कपपह्खपपह्मपपह्मपपह्मपपह्मपपह्सप पह्कपपह्खपपह्मपपह्मपपह्मपपह्मप पह्कपपह्खपपट्मपपह्मपपह्मपपह्मप पह्कपपह्खपपट्मप

less common half-forms

पपस्कपपस्खपपरग्गपपस्चपपस्कपपस्चपपस्छप पर्ज्जपपस्झपपरञ्जपपस्टपपस्ठपपस्कपपस्कप परग्गपपस्तपपर्थ्यपपस्तपपर्ध्यपपर्जपपर्मप पर्म्भपपस्त्रपपरभपपरमपप पपस्यपपस्तप पर्ज्जपपरभपवपपरशपप पपरश्रपपरसपपरसपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्धछप पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्धढप पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धपप पद्धक्षपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप पद्धळपपद्धपपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्धसपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चपपद्छप पद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठपपद्डपपद्छप पद्णपपद्वपपद्थपपद्दपपद्धपपद्नपप पद्फपपद्बपपद्भपपद्मपप पपद्यपपद्लप पद्ळपपद्मपवपपद्शपप पपद्षपपद्सपपद्हपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रअपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रषपपक्रसपपक्रहपप

पपर्क्रपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जप परञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जप परञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जप परञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जप परञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जपपरञ्जप परञ्जपपर पप्रक्रपपग्र्वपपग्रापपग्र्वपप्रह्मपप्रच्मपग्र्छप प्रज्ञपपग्र्मपप्रज्ञपपग्र्टपपग्र्वपप्रह्मपप्रद्मप प्रग्णपपग्र्मपप्रथमपग्र्मपप्रमपप्रमप्रमप पग्र्मपप्रव्यपग्र्भपपग्रमपप पपग्र्मपपग्र्मप पग्रमपवपपश्रापप पपग्रमपपग्रमपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रापपप्रयपपप्रसपपप्रयपपप्रथप
पप्रजपपप्रसपपप्रजपपप्रटपपप्रयपप्रसपपप्रसप
पप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रसपपप्रभपपप्रमपप
पप्रमपपप्रसपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रजप
पप्रमपवपपप्रशपप पपप्रसपपप्रसपप

पपन्कपपन्खपपन्नापपन्धपपन्छपपन्छपपन्छप पन्जपपन्छपपन्छपपन्छपपन्छपपन्छप पन्नापपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नप पन्मपपन्कपपन्भपपन्मपपन्नपपन्लपपन्छप पन्नपवपपन्शपपन्नपपन्सपपन्सपप

पपज्रमपपज्रवपपज्रापपज्रयपपज्रःपपज्र्यपपज्रथप पज्रापपज्रापपज्र्यपपज्रपपज्रपपज्रप पज्रापपज्रापपज्र्यपपज्रपपज्रपप पज्रमपपज्रापपज्रीपपज्रमपपज्रपप पज्रमपपज्रपपव्रपपज्रीपपज्रमपपज्रपप

पपइक्रपपइख्रवपपइग्गपपइघ्रपपइङ्पपइच्चप पइछ्रपपइज्जपपइझ्पपइञ्जपपइट्पपइठ्रपपइह्चप पइट्रपपइग्गपपइत्रपपइथ्रपपइद्मपपइभ्मप पइग्रपपइक्रपपइअपपइभ्मपप पपइयप पइल्रपपइळ्पपइग्मपवपपइश्रापपइश्मपपइसप पइल्रपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चपप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपप पञ्जपप पपण्कपपण्खपपणापपण्घपपण्डपपण्डपपण्छप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णपपप्जपपण्थपपण्दपपण्धपपण्जपप पण्जपपण्जपपण्भपपण्जपप पण्जपपण्जपपण्शपप पपण्जपपण्जप पण्ळपपण्णपवपपण्शपप पपण्जपपण्जपप

पपळपपळापपत्रापपश्चपपळपपळपपळपपळण पञ्जपपञ्चपपञ्जपपळपपळपपळपपळपप्रणप पञ्जपपश्चपपञ्चपपश्चपपञ्जपपञ्चप पश्चपपञ्चपप पपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चप पश्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपः

पप्रक्रपपश्चपपश्रापपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्रापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्मप पश्मपपश्चपपश्भपपश्मपप पपश्यपपश्लप पश्चपपश्मपवपपश्शपप पपश्मपपश्सपपश्लप

पपध्कपपध्खपपध्रापपध्घपपध्डपपध्चपपध्छप पद्भपपध्झपपध्ञपपध्टपपध्ठपपध्डपपध्दप पध्रापपध्रपपध्यपपध्रपपध्मप पध्मपपध्बपपध्भपपध्मपप पपध्यपपध्लप पध्र्यपप्रभपपद्भपप

पप्रक्रपप्रखपप्रापप्रघपप्रचपप्रचपप्रखपप्रणप प्रजपप्रद्रापप्रञपप्रटपप्रजपप्रद्रपप्रणप प्रतपप्रथपप्रद्रपप्रधपप्रनपप्रपप्रपप्रक्रपप्रखप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रजपप्रप्रपवप प्रशपप पप्रक्रपप्रसपप्रह्रपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रपपपप्रकपपप्रखपपप्रभपपप्र पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रपपवपपप्रशपप पपप्रसपपप्रसपपप्रहपप

पप्रक्रपप्रखपप्रगपप्रवपप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वप प्रजपप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वप प्रमप्रापप्रस्वपप्रथपप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वप प्रव्यपप्रभपप्रमपप पप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वपप्रस्व पप्रशपप पप्रवपप्रस्वपप